प्रकाशन हेतु

पटना, 10 दिसंबर। कम- और मध्यम-आय वाले देशों (LMICs) में स्वास्थ्य सूचना प्रौद्योगिकी में नवाचारों नामक दो-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आज प्रारंभ हुआ। इसका आयोजन एडीआरआई (Asian Development Research Institute) के सेंटर फॉर हेल्थ पॉलिसी (CHP) द्वारा किया गया है। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य यह विचार करना है कि स्वास्थ्य देखभाल में डिजिटल तकनीक कैसे चुनौतियों का समाधान कर सकती है और ऐसे देशों में स्वास्थ्य देखभाल के निर्णय-निर्माण को कैसे सुदृढ़ बना सकती है।

वरिष्ठ पत्रकार एवं भारतीय राष्ट्रपति के पूर्व प्रेस सचिव श्री अजय कुमार सिंह ने कहा कि यह सम्मेलन सही समय पर आया है। एडीआरआई ने राष्ट्रीय स्तर पर बिहार की समझ को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और स्वास्थ्य सेवा में डिजिटल तकनीक के उपयोग को लेकर भी यह कार्य निरंतर जारी रखा है। उन्होंने कहा कि डिजिटल तकनीकी परिवर्तन होना ही है, लेकिन हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि यह लोगों के लिए सुलभ, किफायती और सहानुभूतिपूर्ण हो।

बीएसएसएस के सीईओ श्री शशांक शेखर सिन्हा ने गर्व के साथ बताया कि हालाँकि बिहार की आबादी बहुत बड़ी नहीं है, फिर भी "स्कैन एंड शेयर" अर्थात डिजिटल टोकन द्वारा रोगी पंजीकरण में बिहार पूरे देश में प्रथम स्थान पर है। बीएसएसएस को एडीआरआई से तकनीकी सहयोग मिलता है। बिहार DHIS पंजीकरण में प्रथम, EHR में तृतीय, तथा ABHA में चौथे स्थान पर है। यह एक बड़ी उपलब्धि है और बिहार स्वास्थ्य के डिजिटलाइजेशन में अग्रणी है।

बिहार सरकार के स्वास्थ्य विभाग की अपर-सचिव श्रीमती त्शेरिंग वाई भूटिया ने अपने अनुभवों के आधार पर बताया कि राज्य सरकार की पहलों ने आम लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच को कितना बेहतर बनाया है। इसका प्रमाण यह है कि मात्र 6 महीनों में 1.65 करोड़ से अधिक डिजिटल ओपीडी पंजीकरण दर्ज किए गए हैं।

AIIMS-Patna के प्रोफेसर (ब्रिगेडियर) डॉ. राजू अग्रवाल ने अपने संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न नवाचारों के उदाहरण प्रस्तुत किए। इनमें स्वास्थ्य मोबाइल ऐप (Swasthya App) द्वारा ई-परामर्श और टेस्ट रिपोर्ट देखना, टेलीमेडिसिन द्वारा दूर जगह पर रह कर परामर्श लेना तथा एक्स-रे, ईसीजी आदि को समझने हेतु एआई-सक्षम चिकित्सा उपकरण शामिल हैं।

आईजीआईएमएस-पटना के निदेशक डॉ. बिंदे कुमार ने कहा कि हमने 1918 की तुलना में काफी प्रगति की है। 1918 की स्पेनिश फ्लू ने 50–100 मिलियन लोगों की जान ली थी, जबकि कोविड-19 महामारी में लगभग 7 मिलियन मौतें हुईं। मौतों की यह कमी मुख्यतः डिजिटल परिवर्तन के कारण संभव हुई है।

राज्य सर्विलांस अधिकारी डॉ. रागिनी मिश्रा ने एडीआरआई टीम की सहायता से आईडीएसपी की यात्रा को कागज़ से पोर्टल तक पहुँचने की कहानी को प्रस्तुत किया।

जय प्रभा मेदांता अस्पताल के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. रवि शंकर सिंह ने कहा कि स्वास्थ्य क्षेत्र, विशेषकर कोविड महामारी के बाद, एआई के विकास का सबसे बड़ा लाभार्थी है,

TISS, IIPH, IIHMR जैसे राष्ट्रीय संस्थानों के प्रतिनिधियों ने भी अपने महत्वपूर्ण विचार साझा किए। युगांडा, इंग्लैंड, और क़तर के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। बोत्सवाना के स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रतिनिधि भी इस कार्यक्रम में मौजूद थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में एडीआरआई की सदस्य-सचिव डॉ. अश्मिता गुप्ता ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि सभी LMICs एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में डिजिटलाइजेशन तभी सफल होगा जब हम बुनियादी ढाँचे और डिजिटल विभाजन की चुनौतियों को दूर करेंगे। एसबीआई के महाप्रबंधक श्री आर. नटराजन ने बताया कि बैंक भी स्वास्थ्य प्रबंधन के डिजिटलाइजेशन में भूमिका निभा रहे हैं। बिहार सरकार के राज्य सूचना आयुक्त श्री प्रकाश कुमार ने ऐसे संस्थानों के निर्माण का सुझाव दिया जो चिकित्सा शोधकर्ताओं और जनता के बीच सेतु का कार्य कर सकें।

भारत और विदेश के लगभग 150 Public Health विशेषज्ञों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

अंत में डॉ. संचित महापात्रा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

(अभिषेक प्रसाद)